

سُورَةُ مُحَمَّدٍ

Surah 47 — Muhammad (Muhammad) • Medinan • 38 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَصَدُّوا ۚ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَلُهُمْ

जिन लोगों ने कुफ़र एख्तेयार किया और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोका खुदा ने उनके आमाल अकारत कर दिए

2

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَءَامَنُوا ۚ بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ ۚ وَهُوَ الْحَقُّ
مِنْ رَبِّهِمْ ۚ كَفَرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए और जो (किताब) मोहम्मद पर उनके परवरदिगार की तरफ से नाज़िल हुई है और वह बरहक़ है उस पर ईमान लाए तो खुदा ने उनके गुनाह उनसे दूर कर दिए और उनकी हालत संवार दी

3

ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَتَّبَعُوا ۚ الْبُطْلَ وَأَنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَتَّبَعُوا ۚ الْحَقَّ مِنْ
رَبِّهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَلَهُمْ

ये इस वजह से कि काफ़िरों ने झूठी बात की पैरवी की और ईमान वालों ने अपने परवरदिगार का सच्चा दीन एख्तेयार किया यूँ खुदा लोगों के समझाने के लिए मिसालें बयान करता है

4

فَإِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنْتُمُوهُمْ فَشُدُّوا ۖ الْوَتَاقَ
فَإِمَّا مَنًّا ۖ أَوْ بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ
لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَكِن لِّيَبْلُوَا ۖ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ قُتِلُوا ۖ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن
يُضِلَّ أَعْمَلَهُمْ

तो जब तुम काफिरों से भिड़ो तो (उनकी) गर्दनें मारो यहाँ तक कि जब तुम उन्हें ज़ख्मों से चूर कर डालो तो उनकी मुश्कें कस लो फिर उसके बाद या तो एहसान रख (कर छोड़ दे) या मुआवेज़ा लेकर, यहाँ तक कि (दुश्मन) लड़ाई के हथियार रख दे तो (याद रखो) अगर खुदा चाहता तो (और तरह) उनसे बदला लेता मगर उसने चाहा कि तुम्हारी आजमाइश एक दूसरे से (लड़वा कर) करे और जो लोग खुदा की राह में यहीद किये गए उनकी कारगुज़ारियों को खुदा हरगिज़ अकारत न करेगा

5

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ

उन्हें अनकरीब मंज़िले मक़सूद तक पहुँचाएगा

6

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ

और उनकी हालत सवार देगा और उनको उस बेहिश्त में दाखिल करेगा जिसका उन्हें (पहले से) येनासा कर रखा है

7

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ إِن تَنْصُرُوا ۖ اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ

ऐ ईमानदारों अगर तुम खुदा (के दीन) की मदद करोगे तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दम रखेगा

8

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَتَعَسَّ ۖ لَهُمْ وَأُضِلَّ أَعْمَلُهُمْ

और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए तो डगमगाहट है और खुदा (उनके) आमाल बरबाद कर देगा

9

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا ۖ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَلَهُمْ

ये इसलिए कि खुदा ने जो चीज़ नाज़िल फ़रमायी उसे उन्होंने (नापसन्द किया) तो खुदा ने उनकी कारस्तानियों को अकारत कर दिया

10

﴿ أَفَلَمْ يَسِيرُوا ﴾ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا ﴿ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ﴾ ﴿ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ﴾ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَلُهَا

तो क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिरे नहीं तो देखते जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्जाम क्या (खराब) हुआ कि खुदा ने उन पर तबाही डाल दी और इसी तरह (उन) काफिरों को भी (सज़ा मिलेगी)

11

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا ﴿ وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ

ये इस वजह से कि ईमानदारों का खुदा सरपरस्त है और काफिरों का हरगिज़ कोई सरपरस्त नहीं

12

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ﴿ وَعَمِلُوا ﴿ الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ ﴿ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ﴿ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى ﴿ لَهُمْ

खुदा उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे (अच्छे) काम करते रहे ज़रूर बेहिशत के उन बागों में जा पहुँचाएगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और जो काफ़िर हैं वह (दुनिया में) चैन करते हैं और इस तरह (बेफिक्री से खाते (पीते) हैं जैसे चारपाए खाते पीते हैं और आखिर) उनका ठिकाना जहन्नूम है

13

وَكَايِنٍ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً ﴿ مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْتَكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ

और जिस बस्ती से तुम लोगों ने निकाल दिया उससे ज़ोर में कहीं बड़ चढ़ के बहुत सी बस्तियाँ थीं जिनको हमने तबाह बर्बाद कर दिया तो उनका कोई मददगार भी न हुआ

14

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ ﴿ مِّنْ رَبِّهِ ﴿ كَمَنْ زِينَ لَهُ ﴿ سُوءُ عَمَلِهِ ﴿ وَاتَّبَعُوا ﴿ أَهْوَاءَهُمْ

क्या जो शरूष अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हो उस शरूष के बराबर हो सकता है जिसकी बदकारियाँ उसे भली कर दिखायीं गयीं हों वह अपनी नफ़सियानी ख्वाहिशों पर चलते हैं

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ ﴿١﴾ فِيهَا أَنْهَارٌ ﴿٢﴾ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ﴿٣﴾ وَأَنْهَارٌ ﴿٤﴾ مِنْ لَبَنٍ ﴿٥﴾ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ﴿٦﴾ وَأَنْهَارٌ ﴿٧﴾ مِنْ خَمْرٍ ﴿٨﴾ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ﴿٩﴾ وَأَنْهَارٌ ﴿١٠﴾ مِنْ عَسَلٍ ﴿١١﴾ مُصَفًّى ﴿١٢﴾ لَا وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ ﴿١٣﴾ مِنْ رَبِّهِمْ ﴿١٤﴾ كَمَنْ هُوَ خَلِدٌ ﴿١٥﴾ فِي النَّارِ وَسُقُوا ﴿١٦﴾ مَاءً حَمِيمًا ﴿١٧﴾ فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ

जिस बेहिश्त का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है उसकी सिफत ये है कि उसमें पानी की नहरें जिनमें ज़रा बू नहीं और दूध की नहरें हैं जिनका मज़ा तक नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए (सरासर) लज्जत है और साफ़ शफ़ाफ़ यहद की नहरें हैं और वहाँ उनके लिए हर किस्म के मेवे हैं और उनके परवरदिगार की तरफ से बख़्शिस है (भला ये लोग) उनके बराबर हो सकते हैं जो हमेशा दोज़ख में रहेंगे और उनको खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो वह आँतों के टुकड़े टुकड़े कर डालेगा

وَمِنْهُمْ مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا ﴿١﴾ مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا ﴿٢﴾ لِلَّذِينَ أُوتُوا ﴿٣﴾ الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ ءَانِفًا ﴿٤﴾ أُو۟لَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا ﴿٥﴾ أَهْوَاءَهُمْ

और (ऐ रसूल) उनमें से बाज़ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाए रहते हैं यहाँ तक कि सब सुना कर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो जिन लोगों को इल्म (कुरान) दिया गया है उनसे कहते हैं (क्यों भई) अभी उस शख्स ने क्या कहा था ये वही लोग हैं जिनके दिलों पर खुदा ने (कुफ़र की) अलामत मुक़रर कर दी है और ये अपनी नफसियानी ख्वाहिशों पर चल रहे हैं

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا ﴿١﴾ زَادَهُمْ هُدًى ﴿٢﴾ وَءَاتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ

और जो लोग हिदायत याफ़ता हैं उनको खुदा (कुरान के ज़रिए से) मज़ीद हिदायत करता है और उनको परहेज़गारी अता फरमाता है

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ﴿١﴾ ﴿٢﴾ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ﴿٣﴾ فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرُهُمْ

तो क्या ये लोग बस क़यामत ही के मुनतज़िर हैं कि उन पर एक बारगी आ जाए तो उसकी निशानियाँ आ चुकी हैं तो जिस वक़्त क़यामत उन (के सर) पर आ पहुँचेगी फिर उन्हें नसीहत कहाँ मुफीद हो सकती है

19

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مُتَقَلِّبُكُم مِّمَّ تَدْرِكُونَ

तो फिर समझ लो कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और (हम से) अपने और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों के गुनाहों की माफ़ी मांगते रहो और खुदा तुम्हारे चलने फिरने और ठहरने से (खूब) वाकिफ़ है

20

وَيَقُولُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ ۖ وَذُكِرَ
فِيهَا الْقِتَالُ ۖ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۖ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشَىٰ عَلَيْهِ
مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَأُولَٰئِكَ لَهُم

और मोमिनीन कहते हैं कि (जेहाद के बारे में) कोई सूरा क्यों नहीं नाज़िल होता लेकिन जब कोई साफ़ सरीही मायनों का सूरा नाज़िल हुआ और उसमें जेहाद का बयान हो तो जिन लोगों के दिल में (नेफ़ाक़) का मर्ज़ है तुम उनको देखोगे कि तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी (छायी) हो (कि उसकी आँखें पथरा जाएं) तो उन पर वाए हो

21

طَاعَةٌ ۖ وَقَوْلٌ مّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صدَقُوا ۖ اللَّهُ لَكَانَ خَيْرًا ۚ لَّهُم

(उनके लिए अच्छा काम तो) फरमाबरदारी और पसन्दीदा बात है फिर जब लड़ाई ठन जाए तो अगर ये लोग खुदा से सच्चे रहें तो उनके हक़ में बहुत बेहतर है

22

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا ۚ فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا ۚ أَرْحَامَكُمْ

(मुनाफ़िकों) क्या तुमसे कुछ दूर है कि अगर तुम हाकिम बनो तो रूप ज़मीन में फसाद फैलाने और अपने रिश्ते नातों को तोड़ने लगो ये वही लोग हैं जिन पर खुदा ने लानत की है

23

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَرَهُمْ

और (गोया खुद उसने) उन (के कानों) को बहरा और आँखों को अंधा कर दिया है

24

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ ۖ أَلَمْ يَكُنْ عَلَىٰ قُلُوبِ أَقْفَالُهَا

तो क्या लोग कुरान में (ज़रा भी) ग़ौर नहीं करते या (उनके) दिलों पर ताले लगे हुए हैं

25

إِنَّ الَّذِينَ أَرْتَدُّوا ۚ عَلَىٰ أَدْبُرِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۚ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ
وَأَمْلَىٰ لَهُمْ

बेशक जो लोग राहे हिदायत साफ़ साफ़ मालूम होने के बाद उलटे पाँव (कुफ़्र की तरफ) फिर गये शैतान ने उन्हें (बुते देकर) ढील दे रखी है और उनकी (तमन्नाओं) की रस्सियाँ दराज़ कर दी हैं

26

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا ۚ لِلَّذِينَ كَرِهُوا ۚ مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۚ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ

यह इसलिए जो लोग खुदा की नाज़िल की हुई (किताब) से बेज़ार हैं ये उनसे कहते हैं कि बाज़ कामों में हम तुम्हारी ही बात मानेंगे और खुदा उनके पोशीदा मशवरों से वाकिफ है

27

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبُرَهُمْ

तो जब फ़रिश्तें उनकी जान निकालेंगे उस वक्त उनका क्या हाल होगा कि उनके चेहरों पर और उनकी पुश्त पर मारते जाएँगे

28

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا ۚ مَا أَصْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا ۚ رِضْوَانَهُ ۚ فَأَحْبَطَ أَعْمَلَهُمْ

ये इस सबब से कि जिस चीज़ों से खुदा नाखुश है उसकी तो ये लोग पैरवी करते हैं और जिसमें खुदा की खुशी है उससे बेज़ार हैं तो खुदा ने भी उनकी कारस्तानियों को अकारत कर दिया

29

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَن لَّنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَنَهُمْ

क्या वह लोग जिनके दिलों में (नेफ़ाक़ का) मर्ज़ है ये ख्याल करते हैं कि खुदा दिल के कीनों को भी न ज़ाहिर करेगा

30

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
أَعْمَلَكُمْ

तो हम चाहते तो हम तुम्हें इन लोगों को दिखा देते तो तुम उनकी पेशानी ही से उनको पहचान लेते अगर तुम उन्हें उनके अन्दाज़े गुफ्तगू ही से ज़रूर पहचान लोगे और खुदा तो तुम्हारे आमाल से वाकिफ है

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجْهِدِينَ مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَكُمْ ۚ أَخْبَارَكُمْ

और हम तुम लोगों को ज़रूर आजमाएँगे ताकि तुममें जो लोग जेहाद करने वाले और (तकलीफ़) झेलने वाले हैं उनको देख लें और तुम्हारे हालात जाँच लें

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَصَدُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا ۖ الرَّسُولَ مِنْ ۖ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا ۖ اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَسَيُحِبُّ أَعْمَلُهُمْ

बेशक जिन लोगों पर (दीन की) सीधी राह साफ़ ज़ाहिर हो गयी उसके बाद इन्कार कर बैठे और (लोगों को) खुदा की राह से रोका और पैगम्बर की मुखालेफ़त की तो खुदा का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे और वह उनका सब किया कराया अक्रारत कर देगा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ أَطِيعُوا ۖ اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا ۖ أَعْمَلَكُمْ

ऐ ईमानदारों खुदा का हुक्म मानों और रसूल की फरमाँबरदारी करो और अपने आमाल को ज़ाया न करो

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَصَدُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا ۖ وَهُمْ كُفَّارٌ ۖ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ

बेशक जो लोग काफ़िर हो गए और लोगों को खुदा की राह से रोका, फिर काफिर ही मर गए तो खुदा उनको हरगिज़ नहीं बख्शेगा तो तुम हिम्मत न हारो

فَلَا تَهِنُوا ۖ وَتَدْعُوا ۖ إِلَى السَّلَامِ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتْرُكُمُ أَعْمَلَكُمْ

और (दुश्मनों को) े सुलह की दावत न दो तुम ग़ालिब हो ही और खुदा तो तुम्हारे साथ है और हरगिज़ तुम्हारे आमाल (के सवाब को कम न करेगा)

إِنَّمَا الْحَيَوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ ۖ وَلَهُوَ ۖ ۖ وَإِنْ تُؤْمِنُوا ۖ وَتَتَّقُوا ۖ يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ

दुनियावी ज़िन्दगी तो बस खेल तमाशा है और अगर तुम (खुदा पर) ईमान रखोगे और परहेज़गारी करोगे तो वह तुमको तुम्हारे अज़्र इनायत फरमाएगा और तुमसे तुम्हारे माल नहीं तलब करेगा

إِنْ يَسْأَلْكُمْوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخُلُوا؟ وَيُخْرِجْ أَضْغَنْكُمْ

और अगर वह तुमसे माल तलब करे और तुमसे चिमट कर माँगे भी तो तुम (ज़रूर) बुखल करने लगो

هَآأَنْتُمْ هَآؤِلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا؟ فِى سَبِيلِ ٱللّٰهِ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَبْخُلُ ؟ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا

يَبْخُلُ عَنْ نَفْسِهِ؟؟ ٱللّٰهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنْتُمْ ٱلْفُقَرَاءُ ؟ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا؟ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا

غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا؟ أَمْثَلَكُمْ

और खुदा तो तुम्हारे कीने को ज़रूर ज़ाहिर करके रहेगा देखो तुम लोग वही तो हो कि खुदा की राह में खर्च के लिए बुलाए जाते हो तो बाज़ तुम में ऐसे भी हैं जो बुखल करते हैं और (याद रहे कि) जो बुखल करता है तो खुद अपने ही से बुखल करता है और खुदा तो बेनियाज़ है और तुम (उसके) मोहताज हो और अगर तुम (खुदा के हुक्म से) मुँह फेरोगे तो खुदा (तुम्हारे सिवा) दूसरों बदल देगा और वह तुम्हारे ऐसे (बखील) न होंगे